THE

PARLIAMENTARY DEBATES

OFFICIAL REPORTIN THE SIXTH SESSION OF THE COUNCIL OF STATES

commencing on the 15th February 1954

Monday, 15th February 1&54.

The Council met at a quarter to three of the clock, MR. CHAIRMAN in- the Chair.

MEMBER SWORN

SHRI B. V. GURUMOORTHY (Hyderabad).

PAPERS LAID ON THE TABLE

PRESIDENT'S ADDRESS

SECRETARY: Sir, I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both the Houses of Parliament assembled together on the 15th | February 1954.

THE PRESIDENT (DR. RAJENDRA PRASAD) :

राष्ट्रपति (डा० राजेन्द्र प्रसाद) : संसद् के सदस्यगण, मैं आज पूरे एक वर्ष के बाद संसद् के नये सत्र के लिये आप लोगों का स्वागत करने यहां आया हूं । इस एक वर्ष की अवधि में आपको बहुत सी गहन समस्याओं और भारी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा है । इनमें से बहुत सी समस्यायें अभी भी उसी प्रकार हमारे साथ हैं, किन्तु मेरा विश्वास है आप लोग कह सकते हैं कि गत वर्ष में काफी सफलता मिली है । अविजेय बाधाओं और कठिनाइयों पर विजय पाने के मानव के अदम्य उत्साह के प्रतीकस्वरूप एवरेस्ट की अन्तिम विजय हुई । इस महत्वपूर्ण सफलता में एक वीर भारतीय का भी हाथ था । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पुराने भय और तनाव अब भी

पहले के समान बने हैं । परन्तु समझौते के प्रयत्न बराबर जारी हैं और मैं हृदय से विश्वास करता हूं कि इन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप तनाव के वातावरण में सुधार होगा और पश्चिम तथा सुदूरपूर्व में भावी समझौते का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा ।

२. भारत, संसार के सभी देशों के साथ शान्ति और मैत्री की नीति का अनुसरण करता रहा है और ऐसे अवसरों पर जब यह आशा हुई कि हम शान्ति स्थापना के हेतु कुछ कर सकते हैं, हमारे देश ने जिम्मेदारियों को उठाने में कोई संकोच नहीं किया । कोरिया में मेरी सरकार ने तटस्थ राष्ट्रीय प्रत्यावर्तन आयोग की अध्यक्षता स्वीकार की और युद्ध बंदियों के भविष्य के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय होने तक उनकी देख भाल के लिये संरक्षक सेना वहां भेजी । दुर्भाग्यवश विराम सन्धि समझौते में सुझाई गयी पद्धति के अनुसार कार्यवाही नहीं की जा सकी, जिसके कारण एक कठिन स्थिति पैदा हो गई । कुछ दिनों में ही आयोग अपना काम खतम कर देगा और अब संरक्षक सेना धीरे धीरे भारत वापस आ रही है । कोरिया में प्रमुख विवादग्रस्त प्रश्नों का अभी तक निबटारा नहीं हुआ है । मुझे पूर्ण आशा है कि संयुक्त राष्ट्र की साधारण परिषद् में, अथवा कहीं और, इन आवश्यक मामलों को सुलझाने का शीघ्र ही प्रयत्न किया जायेगा । आप सब की ओर से और मैं अपनी ओर से कोरिया